प्रशिक्षण श्रृंखला प्रकाशन-2

राज्य में कुछ महत्वपूर्ण औषधीय पौधों की कृषि कर्ण तकनीक-संक्षिप्त विवरण

NATIONAL MEDICINAL PLANTS BOARD

Plants For Health & Prosperity

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

क्षेत्रीय एवं सुगमता केन्द्र, उत्तर भारत-1,

राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड, आयुष मंत्रालय

आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान,

जोगिन्द्र नगर-175015, जिला मण्डी, हिमाचल प्रदेश

ई-मेल: rcfcnorth@gmail.com

वैब: rcfcnorth.in, jadibutibazar.in, echarak.in

सम्पर्क न० : 01908-222333

कालमेघ *Andographis paniculata*

कृषि विधि

जलवायु और उपयुक्त स्थान: यह पौधा नमीयुक्त गरम जलवायु में समुद्र तल से लगभग 700-800 फुट की ऊंचाई तक वाले क्षेत्रों में, जहाँ का तापमान 35-40 डिग्री से० हो, यह अच्छी वृद्धि करता है। ऐसी जगह उपयुक्त होती है जहाँ अच्छी धूप रहती है।

भूमि: ऐसी भूमि जो जैविक तत्वों से भरपुर हो इस की खेती के लिया उपयुक्त होती है। रेतली दोमट से दोमट भूमि जिसका पी०अच्० मान 6.5-7.5 हो इस पौधे के लिए उपयुक्त होती है। यह पौधा बंजर भूमि में भी आसानी से उग जाता है।

प्रसारण: इस पौधे का प्रसारण बीज से किया जाता है। कालमेघ के बीज में दुगनी मात्र में रेत् मिला लें ताकि छिड़काव करने में आसानी हो। बीजाई से पहले खेत तैयार कर लें तथा जून के महीने में मानसून की बारिश होते ही बीज खेत में डाल दें। बीज ज्यादा गहरा नहीं जाना चाहिए।

खाद की मात्रा: अच्छी- सडी - गली गोबर की 3-4 किलो खाद प्रति सक्वायर मीटर के हिसाब से डालें ।

सिंचाई: आरंभ में फसल की वृद्धि के लिये सिंचाई का ध्यान रखे तथा यह सुनिचित करे कि खेतों में अधिक पानी खड़ा न हो। इस के बाद बरसात में अधिक सिंचाई की जरूरत नहीं पड़ती है। 130-135 दिनों मे फसल तैयार हो जाती है।

उत्पादन: फूल आने से पहले कालमेघ में दवाई का तत्व अधिकतम होता है। फूल आने से पहले हल्की सिंचाई कर के अक्तूबर माह में जब पौधा पीला होने लगे, जड़ सहित इसे उखाड़ लें तथा धुलाई कर के छाया में सुखा कर नमीरहित स्थान में संग्रह करें। सुखी फसल का पाउडर बनाकर भी संग्रह किया जा सकता है।

प्रयोज्य अंग: पंचांग

औषधीय उपयोग: लिवर संबंधित रोगों में कालमेघ का विशेष उपयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त इसका उपयोग भूख बढ़ाने में पेट की गैस, कीड़े एवं कब्ज में भी किया जाता है रोग प्रतिरोधक एवं सामान्य बुखार इत्यादि में।

कालमेघ

पौधा

कालमेघ का सूखा पाउडर

शतावरी *Asparagus racemosus*

कृषि विधि

जलवायु और उपयुक्त स्थान: पौधा समुद्रतल से 1000 मी. ऊंचाई से कम वाले गर्म क्षेत्रों में, जहा का ताप मान 25-30oc हो, उगाया जा सकता है। यह एक बहुवर्षीय कांटो युक्त होता है तथा जड़े मांसल होती है। शतावर के दो भेद सफेद और पीली वाजार में उपलब्ध होते हैं। दोनो भेध एक ही पौधे के रूप है।

भूमि: रेतीली दोमट भूमि जिसका पी.एच. मान 5.5-7.5 के बीच में, खेती के लिए उपयुक्त है।

प्रसारण: बीज एवं वानस्पतिक प्रसार द्वारा।
बीज द्वारा: बुवाई से पहले बीजों को पानी में 24 घटे तक भिगोकर अप्रैल मई में नर्सरी की कयारियों में लगाया जाता है। 10-12 दिन बाद बीज अंकुरित हो जाता है जिन्हे 45 दिन बाद खेतों में प्रतिरोपण किया जा सकता है।
वानस्पतिक प्रसारण: पौधों को वानस्पतिक प्रसारण की विधि से भी लगाया जा सकता है। तने के अन्त में तश्तरी नुमा कल्ले निकलते हैं जिन्हे इस प्रकार काटा जाता है ताकि प्रत्येक टुकड़े में दो आंखें और दो-तीन कंदनुमा मांसल जेड हों। इन टुकड़ों को मिट्टी में दबाया जाता है। 6-10 दिनों में इनकी वृद्धि हो जाती है और 45 दिनों पश्चात् खेतो में रोपण कर सकते हैं।
तैयार पौध मानसून की पहली बोछार के बाद चोड़ी एवं ऊंची पत्तियों पर 60x60 से.मी. की दूरी में लगानी चाहिए। पौधो की ऊंचाई जब 40-45 से.मी. से अधिक हो जाए तो फसल के सहारे की आवश्यकता पड़ती है।

खाद की मात्रा: मांशल जड़ों की अच्छी फसल लेने के लिए खेतों में पहले साल भरपूर सड़ी गली गोबर खाद (FYM) 25-35 टन/हैक्टर डालें और 10-15 टन खाद एक साल बाद निलाई गुड़ाई के पश्चात् डालें।

सिंचाई: यह फसल पानी की अधिक मांग वाली है पर यह ध्यान रहे कि अधिक पानी का जमाव जड़ों को हानि पहुंचा सकता है।

कटाई: 30 माह पश्चात् जड़ों की धुलाई करके उबले पानी में 10 मिनट तक डालें, जिस के पश्चात् जड़ों को निकाल कर ठंडे पानी में डाल दें। ऐसा करने से जड़ों का छिलका आसानी से निकल जाता है तथा जड़ों को सुखाने में आसानी होती है। जड़ों को लंबावत काटकर छोटे-छोटे टुकड़ों में काट कर धूप में सुखा कर रख लें। आजकल व्यवसायिक रूप में जड़ो को छीलने के लिए मशीने भी उपलब्ध है।

उत्पादन: 5-7 टन सुखी जड़े प्रति हैक्टर।

प्रयोज्य अंग: जड़े

औषधीय उपयोग: महिलाओं में स्तन दूध के स्त्राव बढ़ाने मे गैलेक्टागोज के मुख्य रूप में प्रयोग किया जाता है इस के अतिरिक्त इस का उपयोग, टॉनिक रूप में, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढाने में तथा शरीर के वजन को कम करने के लिए शतावरी का उपयोग लाभकारी माना जाता है।

भृंगराज *Eclipta alba*

कृषि विधि

जलवायु और उपयुक्त स्थान: यह पौधा नमीयुक्त गर्म अथवा कम ठंडे जलवायु में समुद्र तल से लगभग 1800 मीटर की ऊंचाई तक वाले क्षेत्रों में जहां का तापमान 25-35°c हो अच्छी वृद्धि करता है।

भूमि: दोमट अथवा दोमट रेतीली नमीयुक्त भूमि जहां का पी.एच. मान 5.5 -8 तक हो पौधे की कृषि के लिए उपयुक्त है।

प्रसारण: बीज एवं तने की कटिंग द्वारा।
प्रसारण के लिए बीज द्वारा ही अधिमान दिया जाता है।
बीज द्वारा भृंगराज के पौधे की नर्सरी विकसित करने के लिए अच्छे अंकुरण प्रतिशत वाले बीच प्रयोग में लाने चाहिए। नर्सरी में बीजों को फरवरी मार्च में लगाए और अंकुरित पौध अप्रैल-मई या अगस्त में वर्षा को ध्यान में रखकर खेतों में रोपण करें। देरी से रोपण पर फसल के उत्पादन पर प्रभाव पड़ता है।
2.5 कि. ग्रा. बीज एक हेक्टर के लिए पर्याप्त होता है।

प्रति रोपण: 5 से 6 सप्ताह के अन्तराल में जब नर्सरी पौध में 4-6 पत्तियां आ जाए तो पौधे को खेतों में प्रतिरोपित करें। पौधे से पौधे की दूरी लगभग 20 से.मी. रखे।

खाद की मात्रा: अच्छी फसल के लिए भरपूर सड़ी-गली गोबर की खाद (FYM) 15-20 टन/ हेक्टर खेतों में तैयारी के समय अच्छी तरह मिलाएं।

सिंचाई: अच्छी फसल उत्पादन लेने के लिए खेतों में नमी बनाए रखें तथा समय-समय पर आवश्यकता अनुसार सिंचाई करें।

उत्पादन: फसल लगभग 90 दिनों में तैयार हो जाती है। फसल काटने के पश्चात साफ पानी से धोकर छाया में सुखाएं तथा ध्यान रखें की फसल सूखने पर काली न पड़े। ताजे भृंगराज पौधे के रस का विशेष लाभ माना जाता है। पकी हुई फसल से बीजों को अलग करके संग्रह कर सकते हैं।
11-12 टन/ हेक्टर ताजी हरी फसल

प्रयोज्य अंग पौधे का बाहय भाग

औषधीय उपयोग: शोथहर, केश टानिक, किडनी एवं लीवर की बीमारियों में उपयोग किया जाता है।

भृंगराज-पौधे

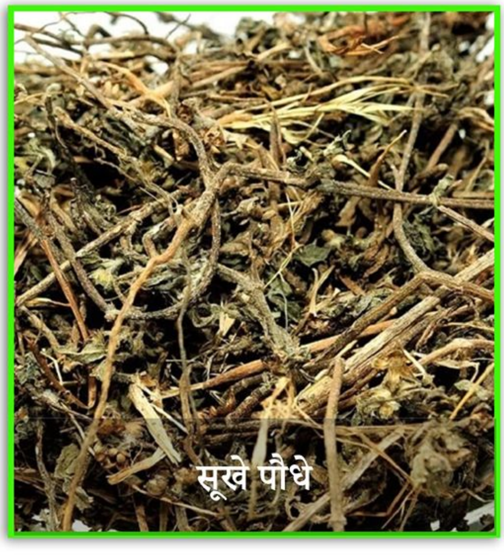
सूखे पौधे

सूखा पाउडर

कलिहारी *Gloriosa superba*

कृषि विधि

जलवायु और उपयुक्त स्थान: यह एक उष्णकटिबंधीय औषधीय पौधा है जो समुद्र तल से लगभग 700 मीटर के कम ऊंचाई वाले क्षेत्रों में जहा का तापमान 25-350c हो और जहां पर औसतन अच्छी वर्षा हो, उगाया जा सकता है।

भूमि: इस पौधे की खेती के लिए लाल या काली मिट्टी जिस में मध्यम जलधारण क्षमता तथा अच्छी जल निकासी के साथ पी॰एच॰ मान 6-7 के बीच हो, अच्छी मानी जाती है।

प्रसारण: कन्द द्वारा:
कलिहारी की व्यावसायिक रूप में इसके भूमिगत 'V' आकार के कन्दों से प्रसारित किया जाता है। कन्द का वजन 50-60 ग्राम से कम ना हो अन्यथा पौधे में फल-फूल नहीं उगते हैं। सुप्त कन्द मई-अगस्त माह तक अंकुरित शुरू होने लगते हैं जिनका रोपण जुलाई-अगस्त में किया जाना चाहिए। कन्दों को सड़ने से बचने के लिए उपचार कर लेना चाहिए। खेती में अच्छी जुताई कर के भरपूर मात्रा में गली-सड़ी गोबर खाद भरपूर मात्रा में मिलाकर उपचारित कन्दों को 6-8 सें॰मी॰ गहरे गढ्ढों में लगभग 45 से॰मी॰ अंतराल में लगाना चाहिए।

खाद की मात्रा: प्रचुर मात्रा में ऑर्गेनिक खाद (FYM) लगभग 20-25 टन प्रति हेक्टेयर डालनी चाहिए।

निगरानी: कलिहारी क्योंकि एक आरोही पौधा है, इस के विकास के लिए सहारे की आवश्यकता होती है, जिसके लिए उचित प्रबन्ध इस प्रकार करना चाहिए कि पौधे को समुचित सूर्य प्रकाश मिले तथा कन्दों को कोई हानि न हो। फसल 170-180 दिन में तैयार हो जाती है।

सिंचाई: प्रारम्भिक चरण में लगभग 4-5 दिनों के अन्तराल में सिंचाई करें। इस के पश्चात समय-समय पर सिंचाई-गुड़ाई कर के आवश्यकता अनुसार सिंचाई करते रहें।

उत्पादन: परिपक्व फलों को तोड़कर 10-15 दिन तक छाया में सुखाएं और जब फल पीले हो जाएं और गहरे पीले रंग के बीज दिखने लगे तो इन्हें अलग करके इकट्ठा करें। भंडारण से पहले बीजों को अच्छी तरह सुखा ले 200-250 किलोग्राम बीज और 15-180 किलोग्राम छिलका की उपज प्रति हेक्टर प्राप्त की जा सकती है।

कल्टीवार: Citrina-yellow tepals, Grandiflora-Large Golden yellow flowers and Lutea-yellow flowers

प्रयोज्य अंग: बीज, कन्द

औषधीय उपयोग: बीज 'कोलचिसिन' का एक समृद्ध स्रोत है जिसका उपयोग गठिया में किया जाता है। प्लांट ब्रीडिंग में पॉलिप्लॉयडी को प्रेरित करने के लिए भी कोलचिसिन का उपयोग किया जाता है। आयुर्वेद में कन्दों को टॉनिक, रोगनाशक कीमिनाशक और सर्पदंश-नाशक के रूप में प्रयोग में लाया जाता है।

कलिहारी-पौधे

सूखे कन्द

बीज़

शिग्रु (सहजन) *Moringa oleifera*

कृषि विधि

जलवायु और उपयुक्त स्थान: यह पौधा नमीयुक्त गरम जलवायु में समुद्र तल से लगभग 700-800 फुट की ऊंचाई तक वाले क्षेत्रों में, जहाँ का तापमान 20-30 डिग्री से० हो, यह अच्छी वृद्धि करता है। पौधा ठण्ड को आसानी से सहन कर लेता है पर पाला हानिकारक होता है।

भूमि: रेतली दोमट भूमि जिसका **पी.एच.** मान 5.5-7.5 के मध्य हो, पौधे के लिए उपयुक्त होती है।

प्रसारण: इस पौधे का प्रसारण बीज व तने की कतरनों से किया जा सकता हैं।

बीज द्वारा:
बीज को बोने से पहले 24 घंटे तक हल्के गरम पानी भिगोना चाहिए। तथा भीगे हुए बीजों को किसी फर्श पर पतली तह बना कर सूखा लें ताकि अतिरिक्त पानी सूख जाये। भीगे हुए बीजों को 3-3 मीटर की दूरी पर पहले से बने 1X1 फीट साइज के गढ़ों लगाये1 प्रति गढ़ा दो-दो बीज लगाएं। बीज लगाने के बाद हल्की सिंचाई कर दें। इस की बुआई मार्च - सितम्बर माह तक कभी भी शुरू की जा सकती है। पत्तों के उत्पाद लेने के लिए मोरिंगा की सघन खेती अपनानी चाहिए जिसके लिए 1 -1 मीटर चौड़े और 8-10 मीटर लंबे बेड तैयार करें। बेड़ो के बीच 1/2 फुट का अंतर रखें और बेड में 10x10 इंच की दूरी में बीज लगाकर पौधे तैयार करें। पत्तों का उत्पाद प्रथम वर्ष में ही 3-4 माह उपरांत ले सकते हैं साल में 3-4 बार पत्तों की कटाई कर सकते हैं। **कतरनों द्वारा** शिग्रु के प्रसारण के लिए पौधे की टहनियां जो कि लगभग 2 साल पुरानी हो, 8-9 इंच के टुकड़े काटकर बेड में मई-जून में 3-4 इंच भूमि में दबाकर लगए तथा कतरनों के अंकुरण के लिए बेड्स में नमी लगातार बनाए रखें। 2-3 सप्ताह में कतरने अंकुरित होना शुरू हो जाती है।

खाद की मात्रा: अच्छी सडी - गली गोबर की 5-6 किलो खाद कम से कम साल दें। पत्तो के अच्छे उत्पादन लेने के लिए भरपूर मात्रा में गली-सडी **गोबर** खाद डाले।

सिंचाई: आरंभ में फसल की वृद्धि के लिये सिंचाई का ध्यान रखेऔर यह सुनिश्चित करें की बेड्स में पानी खड़ा न हो।

उत्पादन: सहंजन को इसकीपतियों के लिए उगाया जाता है। 60-70 दिन के बाद पतियाँ तुड़ाई के लिय तैयार हो जाती हैं। 1 साल में 4 बार तुड़ाई कर सकतें हैं। यदि फली प्राप्त करनी हो तो 160-170 दिनों के बाद इस की फली प्राप्त की जा सकती है।

प्रयोज्य अंग: पत्ते, फल, छाल, जड़

औषधीय उपयोग: आयुर्वेद शास्त्रीय औषध योग शिग्रु गुग्गुलु वटी का उपयोग सूजन संबंधी रोगों में किया जाता है। जिसका एक विशेष घटक शिग्रु होता है। इसके अतिरिक्त इसका उपयोग आयरन की कमी मधुमेह, हिस्टीरिया, लकवा आदि रोगों में भी किया जाता है। पत्तियां पौष्टिक तत्वों एवं विटामिनस से भरपूर होती है।

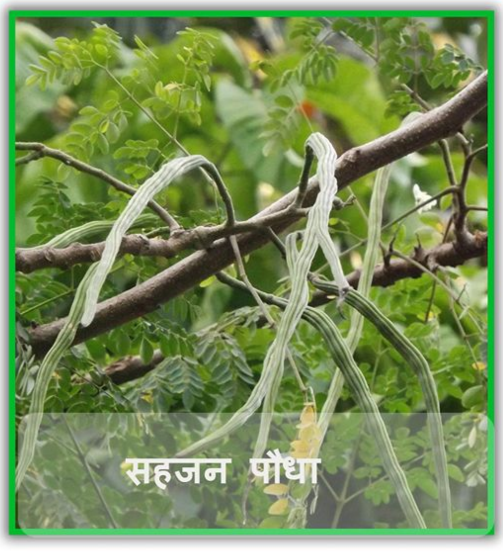
सहजन पौधा

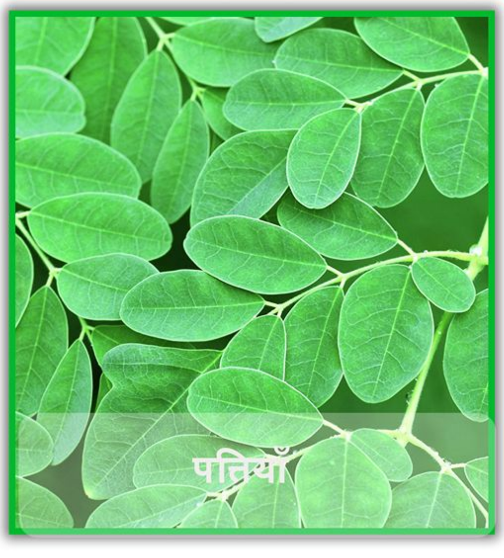
पत्तियाँ

पत्तियों का सूखा पाउडर

श्योनाक *Oroxylum indicum*

कृषि विधि

जलवायु और उपयुक्त स्थान: यह पौधा नमीयुक्त गरम जलवायु में समुद्र तल से लगभग 700-800 फुट की ऊंचाई तक वाले क्षेत्रों में, जहाँ का तापमान 20-35 डिग्री से० हो, यह अच्छी वृद्धि करता है।

भूमि: रेतली दोमट भूमि जिसका **पी.एच.** मान 5.5-7.5 के मध्य हो, पौधे के लिए उपयुक्त होती है।

प्रसारण: इस पौधे का प्रसारण बीज व तने की कतरनों से किया जा सकता हैं।

बीज द्वारा:
बीज को बोने से पहले 24 घंटे तक हल्के गरम पानी में भिगोना चाहिए। भीगे हुए बीजों को नर्सरी के बेड्स में मई-जून 2-2 इंच की दुरी पर 4-4 इंच दूर लाइनों में लगाएं। बेड्स को आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।

कतरनों द्वारा:
तने की कतरनों से प्रसारण के लिए, पौधे की टहनियों जो की लगभग 2 साल पुरानी हों, 8-9 इंच के टुकड़े काट कर बैड में लगाए जिसका लगभग 3-4 इंच भाग भूमि के नीचे रहना चाहिए। कतरने मई जून में नर्सरी में लगनी चाहिय और अंकुरण के लिए बेड्स में नमी के लिए समय-समय पर हल्की सिंचाई करते रहें। कतरने एक सप्ताह के अंदर अंकुरित होना शुरू हो जायेगी।

खाद की मात्रा: अच्छी सडी-गली गोबर की 3-4 किलो खाद प्रति पौधा प्रति साल दें।

प्रतिरोपण: 6-8 सप्ताह पुरानी पौध को 8x10 फुट की दूरी पर तैयार गडों में लगाएं ।

सिंचाई: आरंभ में फसल की वृद्धि के लिये सिंचाई का ध्यान रखे तथा बेड्स में पानी खड़ा नही होना चाहिय।

उत्पादन: 3-4 सालों में पौधा फल-फूल देने लगता है। जड़ो की छाल का उत्पाद लेने के लिए वृक्ष की आयु 8-10 साल होनी चहिये।

प्रयोज्य अंग: छाल, जड़

औषधीय उपयोग: दशमूल एक महत्वपूर्ण घटक। सोथहर, वेदनाहर, मूत्रल, कफहर, ज्वरहर एवं कटु पौष्टिक के रूप में उपयोग।

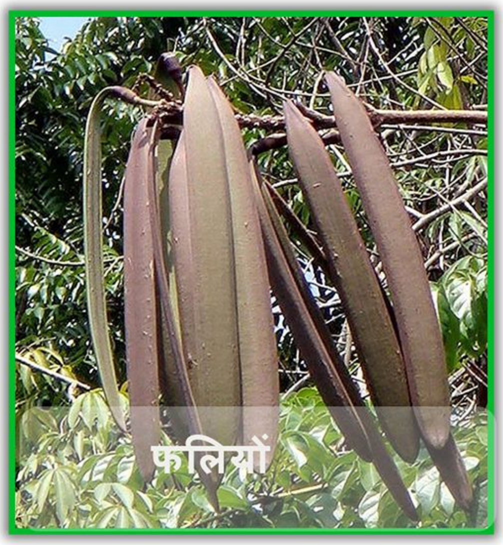

सर्पगंधा *Rauvolfia serpentina*

कृषि विधि

जलवायु और उपयुक्त स्थान: यह पौधा गर्म नमीयुक्त जलवायु में समुद्र तल से 1000 मीटर से कम ऊंचाई वाले क्षेत्रों में जहा का तापमान 20-35°c हो, अच्छी वृद्धि करता हैं।

भूमि: रेतीली दोमट भूमि जो कि कार्बनिक पदार्थ से भरपूर हो छाया युक्त स्थानों में जहाँ का पी० एच० मान3.0-8.5 के मध्य हो, इसकी खेती के लिए उपयुक्त हैं।

प्रसारण: इस पौधे का प्रसारण बीज एवं कतरनों (जड़ा/तना) से किया जा सकता हैं।
बीज द्वारा: 2.5 से 3.4 कि. बीज एक हैक्टर भूमि के लिए प्रयाप्त हैं। बीजों को पहले नर्सरी में उगा कर रोपण करना चाहिए। बीज को बोने से पहले नमक के घोल में उपचारित कर लेना चाहिए ताकि "डेम्पिंग की बीमारी" से बचा जा सके। बीजों को बोने के पश्चात् पतली मिट्टी की तह से ढकना चाहिए। बीज बुआई के बाद 10-12 दिन में जमना शुरू हो जाते हैं। ध्यान रहे बीजों के अंकुरण के लिए नर्सरी में नमी बनाएं रखें। 500 वर्ग मीटर भूमि पौध एक हैक्टर भूमि के लिए प्रयाप्त हैं।

जड़ कतरनों द्वारा: बीज द्वारा पौध तैयार करने की अपेक्षा जड़ कतरनों द्वारा पौधों का प्रसारण एक अच्छा विकल्प है। 2 से 5 से.मी. की कतरने 5 से 10 से.मी. गहरी नालियों से लम्बावत रखी जाती है। 40-50 कि. ग्रा. जड़ कतरने एक हैक्टर भूमि के लिए पर्याप्त है। जड़ कतरने लेने के लिए पौधे की आयु कम से कम दो वर्ष होनी चाहिए। इसी प्रकार तने को कतरनों से भी नर्सरी तैयार की जा सकती है।

प्रति रोपण: 6 से 8 सप्ताह नर्सरी पौध का खेतो में प्रतिरोपन किया जा सकता है। पौधे से पौधे की दूरी 3 फुट के अन्तर में होनी चाहिए। इसी प्रकार लाइन से लाइन की दूरी भी 3 फुट के लगभग रखें।

खाद की मात्रा: अच्छी सड़ी-गली खाद (FYM) लगभग 20 से 25 टन प्रति हेक्टेयर खेती की तैयारी के समय भूमि में अच्छी तरह मिलाएं और 10 से 15 टन प्रति हेक्टर दूसरे वर्ष पौधों को निराई-गुड़ाई के पश्चात् दे।

सिंचाई: आरंभ में अच्छी वृद्धि के लिए पौधों की समुचित सिंचाई का प्रबंध करें। पश्चात् अन्तराल में आवश्यकता अनुसार सिंचाई करते रहे। समय समय में खरपतवार निकालते रहें।

फसल कटाई और अन्य प्रबंध: 18 से 24 माह पश्चात जड़ो को सावधानी पूर्वक भूमि से निकाले क्योंकि इस पौधे की जड़े काफी गहरी होती हैं। जड़ों को उखाड़ने के पश्चात् साफ पानी में अच्छी तरह धो कर छोटे छोटे। टुकड़ों में काट कर छाया में सुखाएं।

उत्पादन: औसतम 10 क्विंटल सुखी जड़े एक हैक्टर से प्राप्त की जा सकती है।

प्रयोज्य अंग: जड़े एवं ताजे पत्ते।

औषधीय उपयोग: जड़ों को उच्च रक्त चाप में औषधी के रूप में प्रयोग किया जाता है। इस के अतिरिक्त ज्वर, हेजा तथा अतिसार में भी लाभकारी है। पत्तियों का रस मोतियाबिन्द में भी लाभकारी है।

सर्पगन्धा-पौधा

सुखी जड़े

जड़ो का सूखा पाउडर

अश्वगंधा *Withania somnifera*

कृषि विधि

जलवायु और उपयुक्त स्थान: यह पौधा नमीयुक्त गरम जलवायु में समुद्र तल से लगभग 700-800 फुट की ऊंचाई तक वाले क्षेत्रों में, जहाँ का तापमान 25-30 डिग्री से० हो, यह अच्छी वृद्धि करता है। ऐसी जगह उपयुक्त होती है जहाँ अच्छी धूप रहती हो। इस पौधे को 500-750 मिली मीटर वर्षा की जरूरत होती है।

भूमि: ऐसी भूमि जो जैविक तत्वों से भरपुर हो तथा अच्छी निकासी युक्त हो, इस की खेती के लिया उपयुक्त होती है। रेतली दोमट से दोमट भूमि जिसका पी.एच. मान 7.5-8.0 हो इस पौधे के लिए उपयुक्त होती है। अश्वगंधा की खेती जून-अक्तूबर माह के बीच में की जा सकती है।

प्रसारण: इस पौधे का प्रसारण बीज से किया जाता है। अश्वगंधा के बीज में दुगनी मात्र में रेत् मिला लें ताकि छिटकाव करने में आसानी हो। बीजाई से पहले खेतों को अच्छी तरह से 2-3 जुताई कर के तैयार कर लें तथा जून के महीने में मानसून की बारिश होते ही बीज खेत में डाल दें। बीज छिटकाव करके नमीयुक्त खेतों में लगायें तथा बीज ज्यादा गहरा नहीं लगायें।

खाद की मात्रा: अच्छी- सडी - गली गोबर की 3-4 किलो खाद प्रति सक्वायर मीटर के हिसाब से डालें।

सिंचाई: आरंभ में फसल की वृद्धि के लिये सिंचाई का ध्यान रखे तथा खेतों में अधिक पानी खड़ा न होने दें। इस के बाद बरसात में अधिक सिंचाई की जरूरत नहीं पडती है। 150-160 दिनों मे इस की फसल तैयार हो जाती है।

उत्पादन: हल्की सिचाई कर के नवम्बर माह में जब पौधा पीला होने लगे, जड़ सहित पौधे को उखाड़ लें तथा जड़ो को अलग करके अच्छी धुलाई कर के तथा छाया में सुखा कर नमीरहित स्थान पर सुखी जड़ों का संग्रह करें।

प्रयोज्य अंग: जड़

औषधीय उपयोग: जड़ों का आयुर्वेद में रसायन के रूप में एवं शक्तिशाली रोग प्रतिसेंध औषधि के रूप में रक्तचाप को नियंत्रण में, मधुमेह एवं कैंसर में भीकियाजाताहै।

आर॰सी॰एफ॰सी॰ एन॰आर॰ 1 टीम

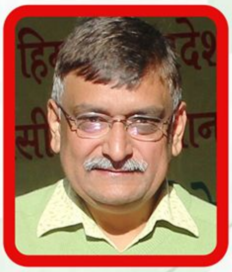

डॉ॰ अरुण चन्दन
क्षेत्रीय निदेशक

निखिल ठाकुर
मार्केटिंग मैनेजर

अवीका सुब्बा
कंसल्टेंट मार्केटिंग

शीतल कुमार चन्देल
कंसल्टेंट टेक्निकल

डॉ॰ स्वेता ठाकुर
कंसल्टेंट टेक्निकल

डॉ॰ मिनाक्षी ठाकुर
कंसल्टेंट टेक्निकल

अभिषेक ठाकुर
ग्राफिक डिज़ाइनर

ऋषि कान्त
डाटा एंट्री ऑपरेटर

विशाल सिंह
स्टेनोग्राफर

अंजली
अकाउंटेंट

ममता ठाकुर
एम॰ टी॰ एस॰

NATIONAL MEDICINAL PLANTS BOARD
Plants For Health & Prosperity

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

क्षेत्रीय निदेशक,
क्षेत्रीय एवं सुगमता केन्द्र, उत्तर भारत-1,
राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड, आयुष मंत्रालय
आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान,
जोगिन्द्र नगर-175015, जिला मण्डी, हिमाचल प्रदेश
ई-मेल: rcfcnorth@gmail.com
वैब: rcfcnorth.in, jadibutibazar.in, echarak.in
सम्पर्क न॰ : 01908-222333